Class- BA(Hons.) Sanaskrit 4th SEM

Subject- Modern Sanskrit Literature

Topic- आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण- भाग 'क'

आधुनिक काल का संस्कृत साहित्य अत्यंत समृद्ध है । आधुनिक संस्कृत साहित्य को काल और विषय की दृष्टि से मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- स्वातन्त्रय पूर्व और स्वान्त्र्योत्तर । सन् 1947 ई. से पूर्व की रचनाओं में देशभक्ति, स्वतन्त्रता की आकांक्षा और उसके लिये संघर्ष के स्वर मुखर हुए हैं; भले ही वह गद्य हो पद्य हो या फिर नाटक हो । स्वतन्त्रता के बाद के साहित्य में आशा, उत्साह और आत्मसम्मान का भाव अधिक प्रखर होकर उभरा ।

आधुनिक संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि में रचनाकारों के बहुमूल्य योगदान को जनसामान्य तक पहुँचाने में आधुनिक संस्कृत साहित्य के सुधी आचार्यों व समीक्षकों का योगदान और भी महत्त्वपूर्ण है । अतः आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामन्य सर्वेक्षण हमें आधुनिक संस्कृत विद्वानों से परिचित कराता है ।

1. हरिदास सिद्धान्त वागीश- हरिदास सिद्धान्त वागीश 20वीं शताब्दी के मूर्धन्य नाटककार हैं । इनका समय 1876-1961 ई. है । ये महान आचार्य मधुसूदन सरस्वती के वंशज हैं । इन्होंने किशोरावस्था में ही (सर्वप्रथम 15वर्ष की अवस्था में) 'कंसवध' नाटक लिखा तथा 18 वर्ष की आयु में **'जानकीविक्रम'** नाटक लिखा ।

इसी क्रम में इन्होंने **'शंकरसंभवम्'**, **'शिवाजीचरितम्'**, **'वांगीयप्रतापम्'** इत्यादि नातक लिखे । **'शंकरसंभवम्'**, **'शिवाजीचरितम्'**, **'वांगीयप्रतापम्'** इत्यादि नाटक लिखें । **'रुक्मिणीहरणम्'** इनका महत्वपूर्ण महाकाव्य है तथा **'वियोगवैभवम्'** एवं

'विद्यावित्तविवादः' खण्डकाव्य । इसके अतिरिक्त इन्होंने **'स्मृतिचिन्तामणिः'**, **'काव्यकौमुदी'** और **'वैदिकविवादमीमांसा'** जैसे शास्त्रीय ग्रन्थ भी लिखें ।

'विराजसरोजिनी', **'मिवारप्रतापम्'**, **'शिवाजीचरितम्'** एवं **'वंगीयप्रतापम्'** इन चारों नाटकों में नृत्य एवं संगीत क् आप्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है । **'विराजसरोजिनी'** नाटक का आरम्भ नटी के नृत्य एवं संगीत से हुआ है । प्रथम अंक में नायिका और उसकी सखियों द्वारा गाया गीत श्रृंगार रस से ओत-प्रोत है । इसके प्रथम अंक में भील सैनिकों के गीत माध्यम से जहाँ आगामी घटनाओं की सूचना दी गई है वहीं मातृभूमि के प्रति भक्ति, निष्ठा एवं रक्षा के भाव को उजागर किया गया । जिससे वीर रस की निष्पत्ति में भी सहायता मिली है । इससे वीर सैनिकों की जीवन शैली का भी परिचय मिलता है तथा संगीत के प्रति उनकी रुचि पर भी प्रकाश पड़ता है कि किस प्रकार संगीत उनको मातृभूमि पर मिटने के लिये उत्प्रेरित करता है ।

'शिवाजीचरितम्' नाटक के प्रथम अंक में नायक के साथियों द्वारा गाए गए बालगीत में देशभक्ति की भावना मुखरित हुई है । द्वीतीय अंक में तोरण दुर्ग के विलासी अध्यक्ष करीमबख्श को पकड़ने हेतु शिवाजी द्वारा साधुवेश में अपने सैनिक रूपी नर्तकियों से नृत्य गीत करवाया गया है जिसमें वंशीवादन मुख्यतः नायक द्वारा हुआ है । यहाँ नृत्य एवं संगीत शत्रु को पकड़ने में सहायक सिद्ध हुए हैं ।

'बङ्गीयप्रतापम्' में भी नृत्य संगीत की योजना द्वारा आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति हुई है । प्रथम अंक में शंकर नामक व्यक्ति द्वारा गाए गए गीत से यवनों द्वारा फैलाई गई अराजकता का चित्रण किया गया है । द्वितीय अंक मे श्रीनिवास नामक वैष्णव साधु के गीत में जीवन की कश्वरता और आध्यात्मिक साधना का वर्णन है । तृतीय अंक में विष्कंभक के प्रारंभ में धीवरों के प्राकृत गीत से नाटक की चारुता में वृद्धि हुई है । पंचम अंक में नृत्य गीत के आयोजन से विजयोल्लास को प्रकट किया गया है । इसी अंक में नवीन कन्याओं द्वारा गाए गए गीत में भावी घटना की व्यंजना है ।

पारिवारिक-सामाजिक विषय-वस्तु को लेकर **'सरला'** नामक लघु उपन्यास इन्होंने लिखा है। हरिदास सिद्धान्त वागीशजी ने बंगला में भी कुछ पुस्तकें लिखी हैं। हरिदासजी जीनकपुर नरेश के टोल में प्राध्यापक रहे। इनके नाटकों में हिन्दुत्व का जातीय अभिमान और राष्ट्रीय पुनरुत्थान का प्रबल भाव है। रंगमंच की दृष्टि से इनके नाटक सफल हैं और कई बार अभिनीत किए गये हैं। युगानुरूप सरल और ओजस्वी गद्यविन्यास तथा भाषा के प्रवाह के कारण हरिदासजी की रचनाओं में सुपाठ्यता है।

2. लीलाराव दयाल- श्रीमती लीलाराव दयाल संस्कृत की सुप्रसिद्ध कवयित्री पण्डिता क्षमाराव की पुत्री हैं। इन्हें संस्कृत लेखन की प्रेरणा अपनी माता से प्राप्त हुई। इनका विवाह उत्तरप्रदेश के एक सभ्य एवं सुसंस्कृत माथुर परिवार में श्री हरीश्वर दयाल से हुआ। इनके पति भारतीय वैदेशिक सेवा में कार्यरत रहे। लेखन के अतिरिक्त लीलाराव का पसंदीदा शौक टेनिस खेलना है।

इनके नाटक आधुनिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। इनकी रचनाओमं(नाटकों/रूपकों) में परम्परावादी नाट्यतथ्य, नान्दी, प्रस्तावना, भरतवाक्यादि का अभाव है। यह तथ्य नूतन नाट्य लेखन शैली का परिचायक है। समसामयिक घटनाओं को आधार बनाकर लघुनातकों का लेखन, अपनी माता की कथात्मक रचनाओं को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करना लीलाराव की विशिष्टता को द्योतित करता है। इन्होंने 18 रूपकों का प्रणयन किया है-

१. गिरिजायाः प्रतिज्ञा	१०. तुकारामचरितम्
२. बालविधवा	११. कपोतालयः
३. होलिकोत्सवः	१२. ज्ञानेश्वरचरितम्
४. क्षणिकविभ्रमः	१३. वृत्तशम्सिच्छत्रम्
५. गणेशचतुर्थी	१४. मीराचरितम्

६. असूयिनी	१५. स्वर्णमपुस्कृशिवलाः
७. मिथ्याग्रहणम्	१६. जयन्तु कुमाउनीयाः
८. वीरभा	१७. तुलाचलाधिरोहणम्
९. कटुविपाकम्	१८. मायाजालम् ।

'जयन्तु कुमाउनीयाः' के अतिरिक्त उनकी प्रायः समस्त रचनाएँ 'मञ्जूषा' नामक संस्कृत पत्रिका में १९५५-१९६२ ई. तक प्रकाशित हुई है । **'जयन्तु कुमाउनीयाः'** का प्रकाशन विश्वसंस्कृतम् के १९६६-६७ ई. के अंकों में हुआ । इसके अतिरिक्त इनकी उपलब्ध कृतियाँ हैं- अनूपः. कृपाणिका, नाराकाण्डाश्रमः, परमभक्तशिवाजी राट्, बालयोगी, हरिसिंह । इन रचनाओं में से ५ रचनायें इनकी माँ के द्वारा रचित रचनाओं का नाटकीय रूपान्तरण है।

लीलाराव दयाल ने सर्वथा आधुनिक शैली में रूपकों की रचना की है । इनकी कुछ प्रसिद्ध एकांकियों हैं, यथा- कपोतालयः, मायाजालम्, गणेशचतुर्थी, वीरभा, जयन्तु कुमाउनीयाः, होलिकोत्सवः आदि । इनकी एकांकियों में आधुनिक समस्याओं तथा सामाजिक एवं राजनैतिक स्थितियों का चित्रण है । बाँझपन(निरपत्यता) की समस्या तथा संतानहीन स्त्री के मनोविज्ञान को **'असूयिनी'** में उद्घाटित किया गया है ।

'गिरिजायाः प्रतिज्ञा' में स्त्रीमन की सुकोमलता गिरिजा के द्वारा पुत्रहन्ता को क्षमादान देकर प्रकट की गई है । **'बालविधवा'** के माध्यम से बालविवाह तथा विधवा पुनर्विवाह की समस्या उठाई गई है । **'वृत्तशंसिच्छत्रम्'** में बेमेल विवाह की बुराई प्रदर्शित है । **'कृपाणिका'** पातिव्रत्य की महिमा को प्रदर्शित करता है ।

कटुविपाकः, वीरभा, स्वर्णमपुस्कृषीवलाः, जयन्तु कुमाउनीयाः राष्ट्रीय पुनर्जागरण एवं राष्ट्रभक्ति की भावना से युक्त है । 'होलिकोत्सव' में सुरापान(मदिरापान) तथा जुआ का दुष्परिणाम प्रदर्शित किया गया है ।

इन एकांकियों के अतिरिक्त तुकारामचरितम्, मीराचरितम् अथा बालयोगी आदि नामक रूपक संगीतिकाएँ हैं। इनमें पात्र संवाद बोलेते हैं तथा अभिनय भी करते हैं।

इनके सभी रूपक नेपाल तथा बंबई में रंगमंचों पर अभिनीत हो चुके हैं। इन्होंने स्वयं भी विविध भूमिकाएँ अपने रूपकों में की है। इनके रूपक प्रचुर ध्वनि निर्देशों से युक्त हैं। अतएव इनका प्रसारण एवं प्रस्तुतीकरण रेडियो पर सफलतापूर्वक किया जा सकता है।